INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 1, January 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

गुरु तेग बहादुर: उनका जीवन, दर्शन और शिक्षाएं

Under The Supervision of:

Dr. Umesh Chandra

(Assistant Professor)

Master of Education

Submitted by

Aarti

Assistant Professor Of Economics in Ngf Degree college

DEPARTMENT OF Education

AFFILIATED By ; **Maharishi Dayanand university Rohtak ,Haryana**

ABSTRACT (सारांश)

यह शोध प्रबंध श्री गुरु तेग बहादुर (1621–1675) का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जो सिख धर्म के नौवें गुरु थे। उनका जीवन और शिक्षाएं धार्मिक स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा के संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। मुगल सम्राट औरंगजेब के धार्मिक असहिष्णुता के काल में, गुरु तेग बहादुर एक दार्शनिक, आध्यात्मिक नेता और सिद्धांतवादी कार्यकर्ता के रूप में उभरे, जिन्होंने विवेक के विरुद्ध समझौते के बजाय शहादत को चुना। यह अध्ययन उनकी दार्शनिक शिक्षाओं, शांति, समानता और बलिदान पर उनके विचारों, धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका, और मुगल काल के सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में उनकी शहादत का विश्लेषण करता है। गुरु तेग बहादुर की विरासत साम्प्रदायिक सीमाओं से परे है, जो समकालीन धार्मिक बहुलवाद, अंतर्धार्मिक सद्भावना और मानवाधिकार कार्यकर्ता के विचारों में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। उनकी शिक्षाएं आधुनिक बहुसांस्कृतिक समाजों में, विशेषकर भारत जैसे लोकतांत्रिक राष्ट्रों में, अत्यंत प्रासंगिक हैं।

KEYWORDS (मुख्य शब्द): गुरु तेग बहादुर, धार्मिक सहिष्णुता, बहुलवाद, शहादत, मुगल काल, अंतर्धार्मिक सद्भावना, मानवाधिकार, सिख दर्शन, धार्मिक स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय

2. INTRODUCTION (परिचय)

2.1 ऐतिहासिक संदर्भ और महत्व (Historical Context and Significance)

सत्रहवीं शताब्दी भारतीय उपमहाद्वेश के राजनीतिक परिदृश्य में एक नाटकीय परिवर्तन का साक्षी बनी। विशेषकर मुगल सम्राट औरंगजेब (1658–1707) के शासन में धार्मिक नीतियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ।[1] अपने पूर्ववर्तियों, विशेषकर अकबर, जिन्होंने धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय को प्रोत्साहित किया, के विपरीत, औरंगजेब ने एक आक्रामक रूप से एकांगी धार्मिक नीति अपनाई।[2]

यह नीति कई ठोस उपायों में प्रकट हुई: गैर-मुसलमानों पर जजिया (धार्मिक कर) लगाना, मंदिरों को नष्ट करना, बलपूर्वक धर्मांतरण, और हिंदू धार्मिक प्रथाओं को व्यवस्थित रूप से हाशिए पर डालना।[3] इसी अशांत पृष्ठभूमि में श्री गुरु तेग बहादुर उभरते सिख धर्म के नौवें आध्यात्मिक नेता के रूप में प्रमुखता से आए।

गुरु तेग बहादुर का महत्व केवल संकीर्ण साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता। जबकि उन्होंने सिख पंथ का नेतृत्व किया, उनकी विरासत व्यापक चिंताओं को समाहित करती है: धार्मिक अल्पसंख्यकों की रक्षा, सार्वभौमिक मानवतावादी सिद्धांतों का प्रतिपादन, और समानता और सामाजिक न्याय पर आधारित एक दार्शनिक रूपरेखा की स्थापना।[4] अपने स्वयं के धर्म से भिन्न लोगों—विशेषकर कश्मीरी पंडितों—के धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए अपना जीवन न्योछावर करने की उनकी इच्छा प्रदर्शित करती है कि उनकी नैतिक प्रतिबद्धता सामुदायिक सीमाओं से परे है।

2.2 अध्ययन का दायरा और उद्देश्य (Scope and Purpose of the Study)

यह शोध प्रबंध गुरु तेग बहादुर के जीवन, दार्शनिक शिक्षाओं और ऐतिहासिक महत्व का एक बहुआयामी जांच प्रस्तुत करता है। केवल जीवनी वृत्तांत प्रस्तुत करने के बजाय, यह अध्ययन एक व्याख्यात्मक रूपरेखा अपनाता है जो उनकी शिक्षाओं की दार्शनिक गहराई और समकालीन प्रासंगिकता पर जोर देता है।

प्राथमिक उद्देश्य हैं:

(1) उनकी आध्यात्मिक रचनाओं में निहित प्रमुख दार्शनिक विषयों को स्पष्ट करना;

(2) मुगल धार्मिक नीति के संदर्भ में उनकी शहादत के सामाजिक-राजनीतिक आयामों का विश्लेषण करना;

(3) भारतीय सभ्यता में बहुवादी विचार के विकास में उनके योगदान का परीक्षण करना; और

(4) उनके नैतिक सिद्धांतों और समकालीन मानवाधिकार प्रवचन के बीच संबंध स्थापित करना।

3. LITERATURE REVIEW (साहित्य समीक्षा)

3.1 गुरु तेग बहादुर पर विद्यमान विद्वतापूर्ण कार्य (Existing Scholarship)

गुरु तेग बहादुर के जीवन और शिक्षाओं के साथ विद्वान जुड़ाव पिछली शताब्दी में काफी विकसित हुआ है। प्रारंभिक जीवनी कार्य, जैसे टी. सिंह की 'गुरु तेग बहादुर – नबी और शहीद', ने उनके जीवन और शहादत की मूल कथा स्थापित की।[5] जी.एस. तलिब की 'गुरु तेग बहादुर - पृष्ठभूमि और सर्वोच्च बलिदान' ने मूल्यवान ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान किए, गुरु के जीवन को मुगल शासन के व्यापक राजनीतिक अर्थशास्त्र के भीतर स्थापित किया।

अधिक हाल के विद्वतापूर्ण कार्यों ने अधिक विश्लेषणात्मक और दार्शनिक दृष्टिकोण अपनाए हैं। डॉ. जसविर कौर और अन्य द्वारा 'गुरु तेग बहादुर की शैक्षणिक दर्शन' पर किए गए कार्य प्रदर्शित करते हैं कि उनकी शिक्षाओं में मानवीय विकास का एक परिष्कृत सिद्धांत निहित था जो नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा पर आधारित था।[6] ये विद्वान जोर देते हैं कि गुरु तेग बहादुर की शैक्षणिक दर्शन केवल आध्यात्मिक चरित्र की नहीं थी बल्कि मौलिक रूप से मानवतावादी थी, जिसका उद्देश्य 'मानवीय जीवन को आत्मा के रूपांतरण और उन्नयन के माध्यम से शुद्ध करना' था।

3.2 बौद्धिक परंपराएं और दार्शनिक पूर्ववर्ती (Intellectual Traditions)

धार्मिक बहुलवाद में सिख योगदान पर किए गए शोध, जैसे एम. रेजा और अन्य द्वारा, इस व्यापक धार्मिक रूपरेखा को स्पष्ट करता है जिसमें गुरु तेग बहादुर काम कर रहे थे। ये अध्ययन प्रदर्शित करते हैं कि सिखवाद, जैसा कि इसके गुरुओं द्वारा अभिव्यक्त किया गया था, सार्वभौमिक भाईचारे (सर्बत दा भला), लैंगिक समानता, और धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धांतों को लगातार आगे बढ़ाता था।[7] महत्वपूर्ण रूप से, गुरु तेग बहादुर ने इन सिद्धांतों को केवल सैद्धांतिक घोषणाओं के माध्यम से नहीं बल्कि प्रत्यक्ष कार्य और अंतिम बलिदान के माध्यम से अभिव्यक्त किया।

गुरु तेग बहादुर का दार्शनिक दृष्टिकोण अलगाववादी रूप से प्रकट नहीं हुआ बल्कि समृद्ध भारतीय बौद्धिक परंपराओं से निकला और उसमें योगदान दिया। उनकी शिक्षाएं हिंदुवाद की धार्मिक परंपराओं, विशेषकर नैतिक आचरण और धर्म को सामाजिक व्यवस्था की नींव के रूप में जोर देने के साथ गूंजती हैं।[8] साथ ही, एकेश्वरवाद की उनकी अभिव्यक्ति और परमात्मा की निरपेक्ष पारलौकिकता सूफी और इस्लामी दार्शनिक प्रभावों को परावर्तित करती है।[9]

3.3 शोध में खामियां (Research Gaps)

गुरु तेग बहादुर पर विद्वत्तापूर्ण कार्य के बावजूद, कुछ महत्वपूर्ण अंतराल बने रहते हैं। पहला, जबकि जीवनी और ऐतिहासिक अध्ययन प्रचुर हैं, समकालीन विश्लेषणात्मक रूपरेखा के भीतर उनकी शिक्षाओं का व्यापक दार्शनिक विश्लेषण सीमित है। दूसरा, उनके बहुवादी धर्मशास्त्र और आधुनिक धर्मनिरपेक्ष उदार सिद्धांत के बीच संबंध को पूरी तरह से खोजा नहीं गया है। तीसरा, उनकी शहादत का विश्लेषण अक्सर सिख सामुदायिक इतिहास के लेंस के माध्यम से किया गया है बजाय वैश्विक इतिहास के भीतर धार्मिक शहादत के एक प्रतिमान उदाहरण के रूप में।[10] यह शोध इन अंतरालों को संबोधित करने का प्रयास करता है।

4. RESEARCH OBJECTIVES AND METHODOLOGY

4.1 शोध प्रश्न और उद्देश्य (Research Questions and Objectives)

यह शोध निम्नलिखित केंद्रीय प्रश्नों द्वारा निर्देशित है:

1. गुरु तेग बहादुर द्वारा अभिव्यक्त किए गए विशिष्ट दार्शनिक सिद्धांत क्या थे, और वे व्यापक भारतीय और वैश्विक दार्शनिक परंपराओं से कैसे संबंधित हैं?

2. गुरु तेग बहादुर ने आक्रामक धार्मिक एकांगीवाद के संदर्भ में धार्मिक सहिष्णुता और बहुलवाद को कैसे संकल्पित किया?

3. विशेषकर हिंदू कश्मीरी पंडितों के साथ अन्य-सिख समुदायों के साथ उनके संबंध की प्रकृति क्या थी, और इसका उनकी नैतिक प्रतिबद्धताओं के बारे में क्या पता चलता है?

4. उनकी शहादत धार्मिक साक्ष्य और नैतिक प्रतिरोध का कौन सा विशिष्ट रूप प्रतिनिधित्व करती है?

5. आधुनिक बहुसांस्कृतिक समाजों और मानवाधिकार प्रवचन के लिए उनकी शिक्षाओं की समकालीन प्रासंगिकता क्या है?

4.2 पद्धतिगत रूपरेखा (Methodological Framework)

यह शोध ऐतिहासिक और दार्शनिक विश्लेषण में निहित एक गुणात्मक, हर्मेनेयूटिकल पद्धति को नियोजित करता है।

प्राथमिक स्रोतों में शामिल हैं:

(1) गुरु ग्रंथ साहिब के भीतर संरक्षित गुरु तेग बहादुर की रचनाएं, विशेषकर उनकी 116 शबदें और कई साखियां;

(2) ऐतिहासिक वर्णन (जन्मसाखी) और गुरु के जीवन के बारे में सिख मौखिक परंपराएं; और

(3) औरंगजेब की धार्मिक नीतियों और अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न का दस्तावेजीकरण करने वाले मुगल काल के समकालीन रिकॉर्ड।[11]

द्वितीयक स्रोतों में विद्वान पुस्तकें, सहकर्मी-समीक्षित पत्रिका लेख और ऐतिहासिक ग्रंथों के आलोचनात्मक संस्करण शामिल हैं। विश्लेषणात्मक रूपरेखा एकीकृत करती है:

(a) ऐतिहासिक संदर्भीकरण, गुरु के जीवन को विशिष्ट सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों के भीतर स्थापित करना; (b) पाठीय व्याख्या, दार्शनिक महत्व के लिए उनकी आध्यात्मिक रचनाओं की व्याख्या करना;

(c) तुलनात्मक धार्मिक विश्लेषण, व्यापक धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं के भीतर उनके विचार को स्थापित करना; और

(d) नैतिक विश्लेषण, समकालीन नैतिक और राजनीतिक सिद्धांत के लिए उनके सिद्धांतों के निहितार्थों की जांच करना।[12]

5. ANALYSIS AND DISCUSSION

5.1 प्रारंभिक जीवन, आध्यात्मिक पालन-पोषण और मुख्य मील के पत्थर

गुरु तेग बहादुर का जन्म 1 अप्रैल 1621 को अमृतसर में हुआ था, जो गुरु हरगोबिंद (छठे सिख गुरु) का पुत्र था।[13] उनका जन्म का नाम त्याग माल था, जो त्याग का प्रतीक था—शायद उनकी आध्यात्मिक यात्रा का एक पूर्वाभास। उनके

पिता, गुरु हरगोबिंद, ने सिखवाद के भीतर एक महत्वपूर्ण परिवर्तन शुरू किया, मीरी-पीरी (सांसारिक और आध्यात्मिक संप्रभुता) की अवधारणा को पेश किया और मुगल दमन का विरोध करने में सक्षम एक अर्ध-सैन्य सिख समुदाय की स्थापना की।[14]

गुरु तेग बहादुर के जीवन के प्रारंभिक वर्ष बौद्धिक कठोरता और आध्यात्मिक अनुशासन के माहौल में व्यतीत हुए। प्रारंभिक खातों से पता चलता है कि युवा तेग बहादुर ने आध्यात्मिक चिंतन और व्यावहारिक बुद्धिमत्ता दोनों के लिए असाधारण योग्यता प्रदर्शित की। अपने पिता द्वारा अन्तर्निहित योद्धा-तपस्वी मॉडल के विपरीत, तेग बहादुर मुख्य रूप से एक आध्यात्मिक दार्शनिक और कवि के रूप में विकसित हुए, हालांकि वे सिख हितों की रक्षा के लिए पूर्ण प्रतिबद्धता बनाए रखते थे।[15]

11 अगस्त 1664 को, अपने छोटे भाई गुरु हरकिशन की मृत्यु के बाद, गुरु तेग बहादुर गुरु की स्थिति में उत्तराधिकारी हुए। यह उत्तराधिकार सिख इतिहास में एक परिवर्तनकारी क्षण था। नए गुरु को एक समुदाय की विरासत मिली जिसका सामना मुगल उत्पीड़न से अस्तित्वगत खतरों, सिखवाद की प्रकृति के बारे में आंतरिक धार्मिक विवादों, और आध्यात्मिक और सांसारिक प्राधिकार के बीच सही संतुलन के बारे में सवालों से हो रहा था।[16]

5.2 दार्शनिक शिक्षाएं - शांति, समानता और बलिदान पर (Philosophical Teachings)

गुरु तेग बहादुर की दर्शन का केंद्र एकेश्वरवादी धर्मशास्त्र पर आधारित एक परिष्कृत आध्यात्मिक दृष्टिकोण है। गुरु ग्रंथ साहिब के भीतर उनकी रचनाएं ईश्वरत्व की पूर्ण एकता (एक ओंकार—'एक निर्माता') पर जोर देती हैं, एक सिद्धांत जो गुरु नानक से विरासत में मिला लेकिन तेग बहादुर द्वारा विशेष दार्शनिक कठोरता के साथ विकसित किया गया।[17]

दिव्य एकता का यह सिद्धांत मानवीय समानता के नैतिकता की बौद्धिक नींव के रूप में काम करता है। गुरु ने सिखाया कि यदि दिव्य वास्तव में एक है—सभी अस्तित्व का स्रोत और आधार—तो सभी मानव प्राणी, जाति, धर्म, लिंग या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना, दिव्य की अभिव्यक्तियों के रूप में अंतर्निहित मूल्य और गरिमा रखते हैं।[18] यह सत्रहवीं शताब्दी के भारत के संदर्भ में एक कट्टरपंथी दार्शनिक स्थिति थी, जहां जाति विचारधारा पर आधारित पदानुक्रमित सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक साम्प्रदायिकता प्रभावी थी।

5.2.1 अनासक्ति और आंतरिक रूपांतरण की नैतिकता (Detachment and Inner Transformation)

गुरु तेग बहादुर की दर्शन अनासक्ति (वैराग) और अहंकार के पारलौकिकता के आधार पर आध्यात्मिक मुक्ति की एक परिष्कृत समझ को स्पष्ट करती है। उनकी शिक्षाएं जोर देती हैं कि सच्ची आध्यात्मिक प्राप्ति अधिग्रहणीय इच्छाओं, सांसारिक स्थिति के प्रति लगाव, और अहंकार-संचालित प्रेरणाओं से प्रगतिशील अलग-अलग होना आवश्यक है।[19]

हालांकि, महत्वपूर्ण रूप से, यह अनासक्ति विश्व से पीछे हटने या पीड़ा के प्रति उदासीनता का अर्थ नहीं है। बल्कि, आध्यात्मिक रूप से मुक्त व्यक्ति, जिसने आत्म-हित को पार कर गया है, दूसरों के साथ करुणा और न्याय के साथ कार्य करने में सक्षम हो जाता है। यह दर्शन जिसे 'करुणा की नैतिकता' (दया) के साथ 'न्याय की नैतिकता' को एकीकृत करना कहा जा सकता है।[20]

व्यक्ति जिसने रहस्य संचार के माध्यम से आंतरिक शांति प्राप्त की है वह ठीक वही व्यक्ति है जो दूसरों की सेवा करने और अन्याय का विरोध करने के लिए सुसज्जित है। गुरु ने सिखाया: 'मन में शांति तब आती है जब कोई नाम पर ध्यान करता है। उन लोगों की बुद्धि जो गुरु के शब्दों पर ध्यान करते हैं, स्थिर और दृढ़ हो जाती हैं।'[21] फिर भी यह आंतरिक शांति स्वार्थी नहीं बल्कि अन्य लोगों की सहायता के लिए सृजनशील है।

5.2.2 बलिदान को नैतिक साक्ष्य के रूप में (Sacrifice as Ethical Witness)

गुरु तेग बहादुर की दर्शन का संभवतः सबसे विशिष्ट तत्व बलिदान (शहादत) को नैतिक साक्ष्य के अंतिम रूप के रूप में उन्नयन है।[22] केवल तपस्वी परित्याग या संन्यासी पीछे हटने के विपरीत, गुरु की बलिदान की समझ सक्रिय अस्वीकार पर जोर देती है—अन्याय का जानबूझकर अस्वीकार भले ही ऐसा अस्वीकार व्यक्तिगत विनाश का अर्थ देता हो।[23]

इस सिद्धांत को अंतर्निहित दार्शनिक दृष्टिकोण मानवीय गरिमा की एक समझ से निहित लगता है जो अंतर्निहित और गैर-पूर्ण है। कोई बाहरी शक्ति—चाहे सम्राट, पुजारी, या अत्याचारी—व्यक्ति के विवेक या धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन करने का वैध अधिकार नहीं रखती है। जब ऐसे उल्लंघनों का सामना करना पड़ता है, तो प्रबुद्ध व्यक्ति शरीर के बाहरी बल के अधीन होने के बावजूद मृत्यु को स्वीकार करने की इच्छा के माध्यम से पारलौकिक सत्य के लिए साक्ष्य देता है।

गुरु की दृष्टिकोण सुझाती है कि ऐसा बलिदान, विफलता का प्रतिनिधित्व करने के बजाय, एक विजय का प्रतिनिधित्व करता है जहां तक यह मानवीय आत्मा की अलंघ्यता को प्रदर्शित करता है भले ही शरीर बाहरी बल के अधीन हो।

5.3 धार्मिक सहिष्णुता और अंतर्धार्मिक सद्भावना में भूमिका

गुरु तेग बहादुर ने अपनी परंपरा से एक परिष्कृत धार्मिक बहुलवाद को विरासत में पाया जो एकाधिक धार्मिक परंपराओं के भीतर प्रामाणिक आध्यात्मिक पथों को मान्यता देता था। यह बहुलवाद गुरु ग्रंथ साहिब में सबसे व्यापक अभिव्यक्ति पाता है, जो हिंदू भक्तों (भक्ति कवियों) और मुस्लिम सूफी संतों की रचनाओं को सिख गुरुओं की रचनाओं के साथ शामिल करता है।[24]

गुरु की अपनी शिक्षाएं लगातार इस बात पर जोर देती हैं कि ईमानदार आध्यात्मिक भक्ति और नैतिक आचरण दिव्य साक्षात्कार का मार्ग बनाते हैं, चाहे जिस विशिष्ट धार्मिक रूप के माध्यम से ऐसी भक्ति व्यक्त की जाती है। हालांकि, गुरु का बहुलवाद सभी धार्मिक स्थितियों की सापेक्षतावादी स्वीकृति नहीं था।

बल्कि, यह प्रामाणिक आध्यात्मिक प्रयास और भ्रष्ट या एकांगी धार्मिक विचारधारा के बीच अंतर पर आधारित था। गुरु स्पष्ट रूप से धार्मिक पाखंड, जाति-आधारित भेदभाव, और अधिपत्य या शोषण के उद्देश्यों के लिए धर्म के हथियारीकरण की निंदा करते थे।[25] उनका बहुलवाद इस प्रकार धार्मिक परंपराओं के साथ एक महत्वपूर्ण जुड़ाव प्रतिनिधित्व करता है, उनकी आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को स्वीकार करता है जबकि उनके भ्रष्ट संस्थागत अभिव्यक्तियों को अस्वीकार करता है।

5.3.1 उत्पीड़ित अल्पसंख्यकों के लिए व्यावहारिक वकालत (Practical Advocacy)

धार्मिक सहिष्णुता के लिए दार्शनिक प्रतिबद्धता गुरु की व्यावहारिक वकालत में ठोस अभिव्यक्ति पाई, विशेषकर कश्मीरी पंडितों के लिए। ऐतिहासिक खातों से संकेत मिलता है कि 1675 में, कश्मीरी हिंदू नेता, औरंगजेब की नीतियों के तहत बलपूर्वक रूपांतरण का सामना करते हुए, गुरु तेग बहादुर के पास उनकी हस्तक्षेप के लिए अनुरोध करने गए।[26]

गुरु ने कथित रूप से उन्हें औरंगजेब को बताने की सलाह दी कि यदि गुरु स्वयं इस्लाम को स्वीकार कर लें, तो हिंदू समुदाय आनंदित रूप से पालन करेंगे। यह रणनीतिगत हस्तक्षेप कई दार्शनिक स्थितियों का प्रतिनिधित्व करता है: (1) धार्मिक स्वतंत्रता के मौलिक मानवीय अधिकार के प्रति एक स्पष्ट प्रतिबद्धता; (2) बलपूर्वक रूपांतरण की वैधता की एक अस्वीकृति; और (3) एक दूसरे समुदाय के अधिकारों की रक्षा के लिए अपने स्वयं के समुदाय को जोखिम में डालने की इच्छा।[27]

गुरु की बाद की गिरफ्तारी और औरंगजेब के आदेश से मृत्यु इन सिद्धांतों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को मान्यता दी, सैद्धांतिक बहुलवाद को अस्तित्वगत साक्ष्य में परिवर्तित किया।[28]

5.4 शहादत और इसके सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ

5.4.1 गिरफ्तारी और कारावास (Arrest and Imprisonment)

गुरु तेग बहादुर को नवंबर 1675 में रोपड़ के पास गिरफ्तार किया गया और औरंगजेब के आदेश पर दिल्ली ले जाया गया, जहां उन्हें किले में कैद किया गया था।[29] कारावास मुगल राजनीतिक अर्थव्यवस्था के भीतर कई कार्य करता था: यह साम्राज्यीय प्राधिकार को संभावित प्रतिद्वंद्वियों पर प्रदर्शित करता था, उभरते सिख समुदाय को डराता था, और परीक्षा करता था कि क्या गुरु इस्लाम को स्वीकार करने के दबाव के तहत दबेंगे या एक चमत्कार का प्रदर्शन करेंगे।

कारावास के दौरान, गुरु तेग बहादुर को मनोवैज्ञानिक यातना का सामना करना पड़ा और इस्लाम में परिवर्तित होने के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन दिए गए। ये प्रस्ताव—जिसमें धन, पद और स्वतंत्रता शामिल थी—मुगल अधिकारियों के गुरु की मूल्यांकन को प्रकट करते हैं जैसे एक महत्वपूर्ण राजनीतिक अभिनेता जिसकी वफादारी संभवतः खरीदी जा सकती थी।[30] गुरु का अटल अस्वीकार, यातना की गंभीरता और प्रस्तावों की उदारता के बावजूद, प्रदर्शित करता है कि सिद्धांत के प्रति उनकी प्रतिबद्धता आत्म-हित के किसी भी अनुमानित रूप से परे थी।

5.4.2 शहादत की प्रकृति (Nature of Martyrdom)

24 नवंबर 1675 को, गुरु तेग बहादुर को दिल्ली के चांदनी चौक में मस्तक अलग करके मृत्युदंड दिया गया।[31] सिख परंपरा के अनुसार, उनके अंतिम क्षण जपजी—सबसे पवित्र सिख प्रार्थना—के पाठ में व्यतीत हुए, जो इंगित करता है कि शरीर साम्राज्यीय हिंसा के अधीन होने के बावजूद उनकी चेतना दिव्य पर केंद्रित रही।[32]

यह मृत्यु गुरु को आध्यात्मिक शिक्षक से जो कहा जा सकता है एक 'ब्रह्मांडीय अर्थ में शहीद' में रूपांतरित करती है—उनकी मृत्यु एक धार्मिक कथन बन गई, एक घोषणा कि मानवीय गरिमा और विवेक तब भी अलंघ्य रहते हैं जब साम्राज्यीय शक्ति पूर्ण दिखाई देती है।

5.4.3 ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व (Historical and Spiritual Significance)

गुरु तेग बहादुर की शहादत सिख इतिहास में और अधिक व्यापक रूप से, धार्मिक प्रतिरोध के इतिहास में एक जलविभाजक क्षण का गठन किया।[33] घटना ने प्रदर्शित किया कि सिख पंथ के पास नेतृत्व था जो न्याय और धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धांतों के लिए सब कुछ त्यागने के लिए तैयार था। गुरु के मृत्यु का सदमा सिख समुदाय के आसपास और, ऐतिहासिक खातों के अनुसार, व्यापक भारतीय समाज के आसपास प्रतिध्वनित हुआ।

अधिक गहराई से, शहादत सिख चेतना में सिद्धांत को परिचय दिया कि अन्याय के प्रति प्रतिरोध गैर-सहयोग के माध्यम से और, यदि आवश्यक हो, तो आत्म-बलिदान के माध्यम से आध्यात्मिक भक्ति का सर्वोच्च रूप प्रतिनिधित्व करता है।[34] यह सिद्धांत, उनके उत्तराधिकारी (और जैविक पुत्र) गुरु गोबिंद सिंह को प्रेषित, सिखवाद के बाद के सैन्यीकरण और खालसा की स्थापना के लिए विचारधारात्मक रूपरेखा प्रदान किया।

5.5 आधुनिक भारत में समकालीन प्रासंगिकता (Contemporary Relevance)

5.5.1 भारतीय संवैधानिक संदर्भ में धार्मिक बहुलवाद

समकालीन भारतीय राज्य संवैधानिक रूप से धर्मनिरपेक्षता के लिए प्रतिबद्ध है, जिसे भारतीय संवैधानिक संदर्भ में धार्मिक मामलों के संबंध में राज्य की तटस्थता के रूप में परिभाषित किया गया है साथ ही सभी नागरिकों के लिए धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी दी गई है।[35] फिर भी, व्यावहार में, समकालीन भारत इस संवैधानिक दृष्टिकोण को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें साम्प्रदायिक हिंसा, धार्मिक अल्पसंख्यकों के विरुद्ध भेदभाव, और धार्मिक राष्ट्रवाद में वृद्धि शामिल है जो बहुवादी शासन को खतरे में डालती है।

गुरु तेग बहादुर की दार्शनिक और व्यावहारिक प्रतिबद्धता से जुड़ी धार्मिक बहुलवाद, पांच सदियों पहले अभिव्यक्त, समकालीन धर्मनिरपेक्षता की रक्षा के लिए गहन संसाधन प्रदान करती है। उनकी शिक्षाएं प्रदर्शित करती हैं कि बहुलवाद केवल प्रतिद्वंद्वी धार्मिक समूहों के बीच एक व्यावहारिक समायोजन नहीं है बल्कि विवेक के अलंघ्य सम्मान को मान्यता देने के आधार पर आधारित एक गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करती है।

5.5.2 मानवाधिकार कार्यकर्ता और धार्मिक शहादत (Human Rights and Religious Martyrdom)

इसके अलावा, एक अन्य विश्वास के सदस्यों को उत्पीड़न से बचाने के लिए उनकी इच्छा एक अंतर्धार्मिक एकजुटता की नैतिकता को अभिव्यक्त करती है जो विशुद्ध रूप से अंतर-सामुदायिक चिंता को पार करती है। समकालीन वैश्विक संदर्भ में, जिसमें धार्मिक अल्पसंख्यकों को कई राष्ट्रों में उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, गुरु तेग बहादुर का उदाहरण मानवाधिकार रक्षा के लिए केंद्रीय धार्मिक शहादत का एक प्रतिमान उदाहरण प्रदान करता है।[36]

राज्य की जबरदस्ती का प्रतिरोध करने के लिए उनका अस्वीकार, सिद्धांत पर अडिगता के बजाय यातना को सहने की इच्छा, और विवेक पर समझौता करने के बजाय मृत्यु को स्वीकार करना—ये सभी धार्मिक साक्ष्य के रूप में प्रतिनिधित्व करते हैं जो शहादत, सविनय अवज्ञा, और अहिंसक प्रतिरोध की समकालीन चर्चाओं के लिए प्रासंगिक हैं।[37]

प्रामाणिक धार्मिक शहादत (पारलौकिक सिद्धांतों के लिए प्रतिबद्धता पर आधारित) और राजनीतिक शहादत (विशेष विचारधारात्मक या राष्ट्रवादी लक्ष्यों के लिए प्रतिबद्धता पर आधारित) के बीच भेद नैतिकतः महत्वपूर्ण हो जाता है। गुरु तेग बहादुर की शहादत पूर्व को अभिव्यक्त करती है: उनका बलिदान सिख प्रभुत्व या साम्प्रदायिक लाभ के लिए नहीं बल्कि सार्वभौमिक सिद्धांत के लिए किया गया था।

5.5.3 सामाजिक न्याय और हाशिए के समुदाय (Social Justice and Marginalized Communities)

समकालीन भारत में, हाशिए के समुदाय—दलित, धार्मिक अल्पसंख्यक, आदिवासी, महिलाएं—व्यवस्थित भेदभाव और हिंसा का सामना करना जारी रखते हैं। गुरु तेग बहादुर का ऐतिहासिक और चलती हुई वकालत उत्पीड़ितों के साथ एकजुटता के लिए कैसे आध्यात्मिक नेतृत्व को उन्मुख किया जा सकता है इसका एक मॉडल प्रदान करती है।[38] अन्यायपूर्ण प्रणालियों के साथ आरामदायक अनुपालन से गुरु का अस्वीकार, अपनी स्थिति को दूसरों के अधिकारों की रक्षा के लिए जोखिम में डालने की इच्छा, और न्याय के सिद्धांतों के लिए अंतिम बलिदान—ये सामाजिक रूपांतरण के लिए समकालीन आंदोलनों के लिए नैतिक संसाधन प्रदान करते हैं।

6. CONCLUSION AND RECOMMENDATIONS (निष्कर्ष और सिफारिशें)

6.1 नैतिक और आध्यात्मिक विरासत का संश्लेषण

श्री गुरु तेग बहादुर का जीवन प्रदर्शित करता है कि आध्यात्मिकता को कैसे न्याय के लिए चैनल किया जा सकता है, चिंतन सक्रिय प्रतिरोध को अन्याय के लिए कैसे उत्पन्न कर सकता है, और कैसे व्यक्तिगत विवेक सबसे बड़ी राज्य शक्ति का भी विरोध कर सकता है। उनकी शहादत घोषणा करती है कि मानवीय गरिमा अलंघ्य है—कोई साम्राज्य, विचारधारा, या जबरदस्ती तंत्र मानव आत्मा पर अंतिम अधिकार नहीं रखता है।

गुरु की दार्शनिक शिक्षाएं—दिव्य एकता में निहित, सार्वभौमिक मानवीय समानता में अभिव्यक्त, और न्याय के लिए सक्रिय प्रविष्टि की मांग—समकालीन बहुसांस्कृतिक समाजों का सामना करने वाली चुनौतियों के लिए अत्यंत प्रासंगिक बनी रहती हैं। धार्मिक समुदायवाद, धार्मिक उत्कर्षता, और अल्पसंख्यक अधिकारों के उल्लंघन की बढ़ती आशंका की अवधि में, उनका उदाहरण नैतिक प्रेरणा और व्यावहारिक मार्गदर्शन दोनों प्रदान करता है।

6.2 समकालीन सिफारिशें (Contemporary Recommendations)

शैक्षणिक संस्थानों के लिए: गुरु तेग बहादुर के जीवन और शिक्षाओं को नैतिकता, धार्मिक अध्ययन और इतिहास पर केंद्रित पाठ्यक्रम में शामिल करना छात्रों को अन्याय के लिए सिद्धांतबद्ध प्रतिरोध और अंतर्धार्मिक एकजुटता के उदाहरणों से परिचित कराएगा।

धार्मिक नेताओं के लिए: सभी विश्वास के नेता गुरु तेग बहादुर के मॉडल पर विचार कर सकते हैं—अन्य परंपराओं के प्रति खुलापन के साथ जुड़ी धार्मिक प्रतिबद्धता। उनका उदाहरण सुझाता है कि प्रामाणिक धार्मिक प्रविष्टि में अपनी परंपरा के भीतर कट्टरवाद और पाखंड के प्रति सतर्क विरोध जबकि दूसरों के साथ सत्यिक संवाद बनाए रखना आवश्यक है।

लोकतांत्रिक शासन के लिए: धार्मिक स्वतंत्रता को सुरक्षित करने और अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध नीति निर्माताओं को अपनी संवैधानिक और कानूनी रूपरेखा तैयार करने में गुरु की दृष्टिकोण से आकर्षण प्राप्त कर सकते हैं जो वास्तविक बहुलवाद की गारंटी देती है।

नागरिक समाज संगठनों के लिए: सामाजिक न्याय, मानवाधिकार और अंतर्धार्मिक सद्भावना के लिए कार्यरत कार्यकर्ता आध्यात्मिक दृष्टिकोण को व्यावहारिक कार्य से कैसे एकीकृत किया जाए, व्यक्तिगत सिद्धांत को संगठनात्मक वास्तविकता से कैसे जोड़ा जाए इसका अध्ययन करके लाभान्वित हो सकते हैं।

6.3 अंतिम विचार (Final Reflections)

पांच सदियों के बाद भी गुरु तेग बहादुर गहन नैतिक प्राधिकार का एक व्यक्तित्व बनी हुई हैं। उनका जीवन सिखाता है कि सिद्धांत जीवन से अधिक महत्वपूर्ण है, न्याय जोखिम की मांग करता है, और प्रामाणिक आध्यात्मिकता उत्पीड़ितों की रक्षा के माध्यम से व्यक्त होता है। एक विश्व में धार्मिक संघर्ष, साम्प्रदायिक हिंसा, और अल्पसंख्यकों के व्यवस्थित उत्पीड़न से विभाजित, उनकी विरासत आशा प्रदान करती है कि एक अलग मार्ग संभव है—हमारी साझा मानवता की स्वीकृति और विवेक की अलंघ्यता पर आधारित एक मार्ग।

उनकी शहादत एक स्थायी सत्य की घोषणा करती है: मानवीय आत्मा, बाहरी हिंसा के अधीन होते हुए भी, पारलौकिक सिद्धांतों में निहित होने पर मौलिक रूप से मुक्त बनी रहती है। यह स्वतंत्रता—विवेक की स्वतंत्रता, विश्वास की, धार्मिक प्रथा की—प्रामाणिक मानवीय गरिमा और न्यायपूर्ण समाज की पूर्वापेक्षा का निर्माण करती है।

7. REFERENCES / BIBLIOGRAPHY (संदर्भ सूची)

1. Ahluwalia, J. S. (2003). सिखवाद को 'सिखों' से मुक्त करना. Punjab: Unistar Books Pvt. Ltd.

2. Britannica. (1998). Guru Tegh Bahadur: Ninth Sikh Guru, Martyrdom, & Facts. Retrieved from britannica.com

3. Dhillon, S. (2004). गुरु नानक और नई सिखवाद. Delhi: Manohar Publishers.

4. Drishti IAS. (2024). गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस. Retrieved from drishtiias.com

5. Guru Granth Sahib. (n.d.). Compiled by Guru Arjan Dev Ji and Guru Tegh Bahadur Ji. Amritsar: Darbar Sahib.

6. Jasvir Kaur, Mini Sharma, & Guneet Toor. (2020). गुरु तेग बहादुर साहिब की शैक्षणिक दर्शन. GHG Journal of Sixth Thought, 7(1–2), 91–115.

7. Kaur, K. (2005). सिख गुरु और उनकी सामाजिक प्रासंगिकता. Journal of Sikh Studies, 29(3), 45–68.

8. Library Gurmat. (n.d.). गुरु तेग बहादुर: दिव्य कवि, रक्षक और शहीद. Retrieved from library.gurmat.info

9. Majumdar, R. C. (1971). मुगल साम्राज्य. Bombay: Bharatiya Vidya Bhavan.

10. Reza, M. M. (2021). सामुदायिक सद्भावना को बढ़ावा देने में सिख उदारवाद की भूमिका. Philosophy and Progress, 195–220.

11. SikhiWiki. (2020). गुरु तेग बहादुर की शहादत. Retrieved from sikhiwiki.org

12. SikhNet. (2020). श्री गुरु तेग बहादुर: उनके जीवन और बानी का अवलोकन. Retrieved from sikhnet.com

13. Singh, T. (1967). गुरु तेग बहादुर – नबी और शहीद (एक जीवनी). Calcutta: The Statesman Press.

14. Talib, G. S. (1976). गुरु तेग बहादुर - पृष्ठभूमि और सर्वोच्च बलिदान. Delhi: Rupak Printers.

15. Times of India. (2022). गुरु तेग बहादुर ने धार्मिक उत्पीड़न से कश्मीरी पंडितों की रक्षा के लिए जीवन दिया. Retrieved from timesofindia.indiatimes.com

16. Voice of Hindus. (2024). अंतर्धार्मिक सद्भावना का जश्न मनाते हुए – गुरु तेग बहादुर को याद करते हुए. Retrieved from voiceofhindus.org

17. Scroll.in. (2024). गुरु तेग बहादुर और औरंगजेब की कथा जटिल राजनीतिक वास्तविकताओं को अन्तर्भुक्त करती है. Retrieved from scroll.in

18. Singh, D. P. (2020). श्री गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाएं: एक दृष्टिकोण. Journal of Sikh Studies and Comparative Religions, 44(2), 48–69.

8. FOOTNOTES (फुटनोट्स)

[1] Majumdar, R. C. (1971). मुगल साम्राज्य. Bombay: Bharatiya Vidya Bhavan. औरंगजेब की नीतियां सत्रहवीं शताब्दी के अंत में मुगल धार्मिक विचारधारा के 'कठोरीकरण' का प्रतिनिधित्व करती हैं।

[2] सम्राट का स्पष्ट लक्ष्य, ऐतिहासिक रिकॉर्ड में प्रलेखित, भारत को दार-उल-इस्लाम (इस्लाम का घर) में परिवर्तित करना था।

[3] जजिया (धार्मिक कर) को 1679 में औरंगजेब द्वारा फिर से लागू किया गया। मंदिरों का विध्वंस, विशेषकर वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर, धार्मिक प्रभुत्व के प्रतीकात्मक कार्य बन गए।

[4] यह दृष्टिकोण समकालीन सिख विद्वत्ता में सबसे स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया गया है।

[5] Singh, T. (1967). गुरु तेग बहादुर – नबी और शहीद (एक जीवनी). Calcutta: The Statesman Press.

[6] Jasvir Kaur, Mini Sharma, & Guneet Toor. (2020). गुरु तेग बहादुर साहिब की शैक्षणिक दर्शन. GHG Journal of Sixth Thought, 7(1–2), 91–115.

[7] Reza, M. M. (2021). सामुदायिक सद्भावना को बढ़ावा देने में सिख उदारवाद की भूमिका. Philosophy and Progress, 195–220.

[8] धार्मिकता (धर्म) और सामाजिक व्यवस्था की नींव के रूप में न्याय (अर्थ) पर जोर गुरु की शिक्षाओं में प्रतीत होता है।

[9] भक्ति आंदोलन, मध्यकालीन काल में संपन्न, दिव्य के साथ भक्तिमय संलग्नता पर जोर देता है।

[10] समकालीन शहादत अध्ययन ने अन्य लोगों के अधिकारों की रक्षा से उत्पन्न धार्मिक शहादत को अक्सर अनदेखा किया है।

[11] यह शोध ऐतिहासिक और दार्शनिक विश्लेषण में निहित एक गुणात्मक, हर्मेनेयूटिकल पद्धति को नियोजित करता है।

[12] विश्लेषणात्मक रूपरेखा एकीकृत करती है: (a) ऐतिहासिक संदर्भीकरण, (b) पाठीय व्याख्या, (c) तुलनात्मक धार्मिक विश्लेषण, (d) नैतिक विश्लेषण।

[13] तिथि 1 अप्रैल 1621 को अधिकांश विद्वान स्रोतों द्वारा स्वीकार किया जाता है।

[14] मीरी-पीरी (सांसारिक-आध्यात्मिक) का सिद्धांत धार्मिक विचार में एक महत्वपूर्ण नवाचार प्रतिनिधित्व करता है।

[15] अपने पिता के सैन्य तैयारी पर जोर के विपरीत, गुरु तेग बहादुर आध्यात्मिक विकास और दार्शनिक शिक्षा पर केंद्रित था।

[16] उत्तराधिकार स्वयं विवादास्पद था, लेकिन गुरु तेग बहादुर की मान्यता प्राप्त आध्यात्मिक प्राधिकार उनकी स्थिति को सुरक्षित किया।

[17] एक ओंकार (एक निर्माता) सिख धर्मशास्त्र को एकीकृत करने वाले मूल आध्यात्मिक सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है।

[18] यह धार्मिक समतावाद पूर्ववर्ती गुरुओं द्वारा स्थापित लंगर (सामुदायिक रसोई) की संस्था में व्यावहारिक अभिव्यक्ति पाती है।

[19] हिंदू और सिख दर्शन में वैराग (अनासक्ति) की अवधारणा विशिष्ट रूप से संसार से अलग-थलग एकांगिता को संदर्भित करती है।

[20] यह आध्यात्मिकता और नैतिकता का एकीकरण सिख दर्शन की एक विशिष्ट विशेषता है।

[21] यह उद्धरण पारंपरिक खातों से गुरु की शिक्षाओं का पुनर्कथन है।

[22] सिख शब्दावली में बलिदान (शहादत) की अवधारणा आंतरिक परित्याग और सिद्धांत के लिए बाहरी पीड़ा दोनों को समाहित करती है।

[23] यह दार्शनिक दृष्टिकोण बाद के यूरोपीय सिविल अवज्ञा के सिद्धांतकारों के साथ गूंजता है।

[24] गुरु ग्रंथ साहिब हिंदू भक्तिमय कवियों (भक्त) जैसे रविदास, नामदेव और ढन्ना से रचनाएं शामिल करता है।

[25] गुरु की धार्मिक पाखंड और जाति-आधारित भेदभाव की आलोचना उनकी रचनाओं के आसपास दिखाई देती है।

[26] सिख परंपरा में संरक्षित ऐतिहासिक खातों से संकेत मिलता है कि कश्मीरी हिंदू नेताओं ने गुरु से हस्तक्षेप के लिए अनुरोध किया।

[27] यह रणनीतिक हस्तक्षेप धार्मिक स्वतंत्रता के मौलिक मानवीय अधिकार के प्रति एक स्पष्ट प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करता है।

[28] गुरु की बाद की गिरफ्तारी और मृत्यु इन सिद्धांतों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को मान्यता दी।

[29] गुरु तेग बहादुर को नवंबर 1675 में रोपड़ के पास गिरफ्तार किया गया।

[30] धन और पद की व्यावहारिकता सम्राट द्वारा गुरु की गणना को प्रकट करती है।

[31] 24 नवंबर 1675 को सिखों द्वारा शहीदी दिवस के रूप से वार्षिक रूप से याद किया जाता है।

[32] जपजी (अर्थ 'प्रभु का पाठ') गुरु नानक द्वारा रचित सबसे मौलिक सिख प्रार्थना है।

[33] गुरु तेग बहादुर की शहादत सिख इतिहास में एक जलविभाजक क्षण का गठन किया।

[34] शहादत सिख चेतना में सिद्धांत को परिचय दिया कि अन्याय के प्रति प्रतिरोध आध्यात्मिक भक्ति का सर्वोच्च रूप प्रतिनिधित्व करता है।

[35] भारतीय संविधान, 1950 में अपनाया गया, धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी देता है।

[36] गुरु तेग बहादुर का उदाहरण मानवाधिकार रक्षा के लिए धार्मिक शहादत का एक प्रतिमान उदाहरण प्रदान करता है।

[37] ये सभी शहादत, सविनय अवज्ञा, और अहिंसक प्रतिरोध की समकालीन चर्चाओं के लिए प्रासंगिक हैं।

[38] गुरु तेग बहादुर का उदाहरण उत्पीड़ितों के साथ एकजुटता के लिए आध्यात्मिक नेतृत्व को उन्मुख करने का एक मॉडल प्रदान करता है।

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.